REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | APRIL - 2022

वागड़ का जलियावाला बांग : मानगढ़ धाम

लक्ष्मण ताबियाड
शोधार्थी, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर.

प्रस्तावना

मानगढ़ धाम राजस्थान में बांसवाडा जिले का एक पहाड़ी क्षैत्र है। यहाँ गुजरात और मध्यप्रदेश की सीमाएँ लगती है। यहाँ पर महान संत गोविन्द गुरु के नेतृत्व में 1500 भीलो ने अपना बलिदान दिया था। यह बलिदान आजादी के आन्दोलन में अब तक ख्यातनाम जलियावाला बाग के बलिदान से भी बडा और उससे भी पहले हो चुका था।

भूमिका

मानगढ़ धाम बाँसवाड़ा जिले में आनन्दपुरी से कुछ दूरी पर बना हुआ है यह ऐसा स्मारक है जो गुरू भक्ति और देशभक्ति को एक साथ दर्शाता है। तकरीबन सौ साल पहले 17 नवम्बर, 1913 मार्गशीर्ष पूर्णिमा पर गुरु का जन्म दिन मनाने के लिए एकल हुए हजारों गुरु भक्तों को ब्रिटिश सेना ने मौत के घाट उतार दिया था।

आदिवासियों में जनजागरण गुरु गोविन्द

17 नवम्बर 1913 को मानगढ–पहाडी पर भील समुदाय के हजारो लोगों को अंग्रेज सरकार ने गोली चलवाकर हत्या कर दी। इसे ही मानगढ नरसंहार कहते है। स्थानीय भील समुदाय के लोग इस घटना को जलियावाला बाग हत्याकाण्ड के समरूप (समकक्ष) बताते है भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में अमृतसर के जलियावाला बांग हत्याकांड की खूब चर्चा होती है, परन्तु मानगढ नसंहार को संभवत भूला दिया गया, क्योंकि इसमे बलिदान होने वाले लोग निर्धन व भील समुदाय से थे। मानगढ़ गुजरात व राजस्थान राज्य के बांसवाड़ा जिले कि आनन्दपुरी तहसील के एक पहाडी क्षैत्र है। यहाँ मध्यप्रदेश और गुजरात की सीमाएँ भी लगती है। यह क्षैत्र आदिवासी बाहुल है। मुख्यतः यहाँ महाराणा प्रताप के सेनानी अर्थात भील जनजाति के लोग रहते है। स्थानीय सामन्त रजवाडे तथा अग्रेज इनकी अशिक्षा, सरलता तथा गरीबी का लाभ उठाकर शारीरिक शोषण करते थे।

इससे फैली कुरीतियों तथा अंध परम्पराओं को मिटाने के लिए संत गोविन्द गुरु ने एक बड़ा–सामाजिक एवं आध्यात्मिक आन्दोलन खडा किया जिसे भगत आन्दोलन कहते है।

गोविन्द गुरु का जन्म

गोविन्द गुरु का जन्म 20 दिसम्बर 1858 ने डूँगरपुर जिले के एक बांसिया बेडसा गांव में गोवारिया जाति के (बंन्जारा) परिवार में हुआ था। बचपन से ही उनकी रूचि शिक्षा के साथ–साथ अध्यात्म में भी थी।

दयानन्द सरस्वती की प्रेरणा से उन्होंने अपना व्यक्तिगत जीवन व जीकर देश, धर्म और समाज की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने अपनी गतिविधियों का केन्द्र वागड क्षैत्र को बनाया था।

मानगढ़ धाम जहॉ दिखती है देशभक्ति व गुरू भक्ति

गोविन्द गुरु ने भगत आन्दोलन 1890 के दशक में शुरू किया था। आन्दोलन में अग्नि देवता को प्रतीक माना गया था। अनुयायियों के पवित्र अग्नि के समक्ष खडे होकर पुजा के साथ–साथ हवन (अर्थात धुनी) की पुजा करनी होती थी।

1883 ई. में उन्होंने, सभ्य सभा की स्थापना की। सभ्य सभा आधार बनाकर शराब, मांस, चोरी, व्यक्तिचर आदि कुरीतियों से दूर रहने की शिक्षा दी थी। उन्हांने परिश्रम कर, सादा जीवन जीने प्रतिदिन स्थान, यज्ञ एवं भजन किर्तन करने, विद्यालय स्थापित कर बच्चों को शिक्षा से जोडने का काम किया था। तथा समाज के झगड़े पंचायत में सुलझाने, अन्याय न सहने, अग्रेजों के क्रपापात्र जागीरदारों को लगान न देने व बेगार न करने तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर स्वदेशी निर्मित वस्तुओं का उपयोग करने का गाँव–गाँव में प्रचार–प्रसार किया। कम समय में ही उनके भक्तों की संख्या काफी बढ़ गई। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को सभा का वार्षिक मेला होता है। जिसमें लोग हवन करते हुए घी व नारियल की आहुति देते थे। लोग हाथ में घी के बर्तन तथा कन्धे पर अपने परम्परागत शस्त्र लेकर आते थे, मेले में सामाजिक व राजनीतिक समस्याओं की चर्चा भी होती थी। इससे वागड़ का यह जनजाति क्षैत्र धीरे–धीरे ब्रिटिश सरकार तथा स्थानीय सामन्तों के विरोध की आग में सुलगने लगा।

मानगढ़ हत्या काण्ड

17 नवम्बर 1913 (मार्गशीर्ष पूर्णिमा) को मानगढ़ की पहाड़ी पर वार्षिक मेले का आयोजन होने वाला था। इससे पूर्व में गोविन्द गुरु ने शासन तंत्र को पत्र के द्वारा अकाल से पीडित आदिवासियों से खेती पर लिया जा रहा कर घटाने धार्मिक परम्पराओं का पालन करने तथा बेगार के नाम पर उन्हें परेशान न करने का आग्रह किया था। परन्तु प्रशासन ने एक न सुनी ओर पहाड़ी को चारो ओर से घेर कर मशीनगन और तोपे लगा दी। इसके बाद गोविन्द गुरू को तुरन्त मानगढ पहाड़ी छोडने का आदेश दिया। उस समय तक वहाँ लाखो भगत आ चुके थे।

अंग्रेजों के कर्नल शटन के नेतृत्व में गोलीया चलना प्रारम्भ कर दी। जिससे हजारों लोग मारे गये। जिनकी संख्या 1500 तक कही गयी है।

निष्कर्ष

अग्रेजों ने गोविन्द गुरु ने गिरफ्तार कर पहले फांसी और फिर आजीवन कारावास की सजा दी। 1923 में जेल से मुक्त होकर वे भील सेवा सदन, झालोद के माध्यम से लोक सेवा के विभिन्न कार्य करते रहे। 30 अक्टूबर 1931 को ग्राम कम्बेई (गुजरात) में उनका देहान्त हुआ। प्रतिवर्ष मार्गशीर्ष पूर्णिमा को उनकी समाधि पर लाखों आदिवासी लोग उन्हें श्रद्धा–सुमन अर्पित करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. अमर बलिदान का साक्षी मानगढ धाम
2. राजपूत जनसंहार : इतिहास में दफन सबसे बडी कुर्बानी